स्वाइन फ्लू में महामारी के सारे गुण हैं

शुरुआती विश्लेषण से पता चला है कि स्वाइन फ्लू का वायरस (एच-1एन-1) भी पूर्व के इसी तरह के वायरस के समान तेज़ गति से फैलता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के त्वरित महामारी आकलन द्वारा संकलित व सांइस के ऑन लाइन संस्करण में प्रकाशित परिणाम दर्शाते हैं कि स्वाइन फ्लू एक महामारी की तरह फैल सकता है। अलबत्ता इसके जानलेवा प्रभाव 1918 में फैले फ्लू से कम हैं।

एच-1एन-1 के फैलाव से लगता है कि मनुष्यों में स्वाइन फ्लू से सम्बंधित वर्तमान किस्म के प्रति प्रतिरोध क्षमता ज़्यादा है। 'यह एक वायरस है जो कि निश्चित रूप से विश्वव्यापी महामारी पैदा करेगा।' यह कहना है इस अध्ययन के लेखक लंदन के इम्पीरियल कॉलेज के महामारी विज्ञानी नील फर्ग्यूसन का। लेकिन उनके मुताबिक यह उतनी बड़ी विपत्ति नहीं हैं जितना डर था।

यह अध्ययन ज़्यादातर मेक्सिको के प्रमाणों पर आधारित है, जहां सबसे पहले यह संक्रमण शुरू हुआ। यह डाटा सच में प्रारंभिक है और इसके आधार पर पूरी तस्वीर बनाना बहुत जल्दबाज़ी होगी कि कैसे यह वायरस पूरी आबादी पर असर डालेगा। लेकिन फर्ग्यूसन कहते हैं कि मॉडलिंग के शुरुआती प्रयासों से पता चलता है कि आगे का घटनाक्रम क्या होगा।

फर्ग्यूसन और उनके साथियों ने शुरुआती आंकड़ों को सांख्यिकीय मॉडल में रखकर बताया है कि मैक्सिको में अप्रैल के अंत तक 6000-32000 लोगों में इस वायरस का संक्रमण हुआ था। साथ ही टीम ने इन महामारी वैज्ञानिक आंकड़ों और वायरस की जिनेटिक विविधता सम्बंधी जानकारी के आधार पर बताया है कि स्वाइन फ्लू वायरस किस दर से फैलता है।

वॉशिगंटन विश्विविद्यालय के एरा लोंग्जिनी का मत है कि ये आंकड़े उस दौर के हैं जब ज़बर्दस्त मौसमी फ्लू चल रहा था। अतः इनके आधार पर यह कहना मुश्किल है कि उत्तरी अमेरिका में बसंत और सर्दी में क्या स्थिति होगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का विश्लेषण दर्शाता है कि इस फ्लू का असर बड़ों से ज़्यादा बच्चों पर हुआ है जो मौसमी फ्लू से भिन्न है। फर्ग्यूसन और उनके साथियों द्वारा ला ग्लोरिया के एक समुदाय से प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि फ्लू का ज़ोखिम उम्र के साथ बदलता है। फर्ग्यूसन कहते हैं कि एक संभावना यह है कि एच-1एन-1 वायरस आम मौसमी फ्लू में भी मौजूद होते हैं। तब यह संभव है कि वयस्कों का सामना इस वायरस से हो चुका होगा और उनमें प्रतिरोध क्षमता पैदा हो गई होगी।

फर्ग्यूसन एक और बात का संकेत देते हैं। इस बार के फ्लू से मृत्यु दर काफी कम रही है। इसके बावजूद, स्वास्थ्य कर्मियों को आने वाले मौसमी फ्लू के लिए सचेत रहना चाहिए। सामान्य फ्लू वाले साल में 10 प्रतिशत जनसंख्या इससे पीड़ित होती है। लेकिन हो सकता है कि जब स्वाइन फ्लू अगले साल लौटेगा तो 30 प्रतिशत जनसंख्या प्रभावित होगी। इसका मतलब यह है कि स्वास्थ्य तंत्र पर बड़ा बोझ आएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***